तीन हज़ार का उद्धार कैसे हुआ! (2:37-41, 47)

पिछले दो पाठों में, हमने पिन्तेकुस्त के दिन के उस जोश का अनुभव किया, जब प्रेरितों ने पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाया, और पतरस ने भरपूरी से पहली बार सुसमाचार का प्रचार किया। प्रेरितों 2 का अध्ययन जारी रखते हुए, आइए अपना ध्यान यहूदियों के मनपरिवर्तन पर लगाएं जब उस स्मरणीय अवसर पर तीन हज़ार लोगों ने उद्धार पाया था।

उनके मनपरिवर्तन का मुख्य कारण पतरस का प्रभावशाली प्रवचन था, जिसका हमने पिछले पाठ में अध्ययन किया। पौलुस ने कहा, ''सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है'' (रोमियों 10:17)। यदि कोई उद्धार पाना चाहता है, तो उसे पहले यीशु के बारे में जानना चाहिए![1] हमने पिछला पाठ पतरस के इन शब्दों की गूंज के साथ समाप्त किया था: ''सो अब इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को, जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी'' (2:36)। पतरस के श्रोताओं ने उसके ये शब्द सुनकर अपनी प्रतिक्रिया कैसे व्यक्त की?

मसीह में विश्वास लाकर (2:37)

पतरस द्वारा यीशु के बारे में सामर्थपूर्ण प्रचार की समाप्ति पर मेरी कल्पना के अनुसार वहां कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया। फिर उसके श्रोताओं की पीड़ा भरी पुकार गूंजी। ''तब[2] सुनने वालों के हृदय छिद गए, और वे पतरस और प्रेरितों से कहने लगे कि 'हे भाइयो, हम क्या करें?' '' (आयत 37)।[3] इन लोगों ने अभी-अभी यीशु के बारे में पतरस से जो कुछ सुना था उस पर विश्वास किया, वरन उनकी ऐसी प्रतिक्रिया न होती। उद्धार पाने के लिए विश्वास का होना अनिवार्य है (यूहन्ना 8:24)।

यह विश्वास करके कि यीशु ही मसीह है, वे पुकार उठे कि ''हम क्या करें?'' उनके प्रश्न में छिपी पीड़ा की हम पूरी तरह से प्रशंसा नहीं कर सकते। वे जीवन भर मसीह की बाट जोहते रहे थे। प्रत्येक प्रार्थना में, आराधनालय की सभा में, और त्यौहार के दिन सब बातों में पूरी कौम मसीहा की राह देख रही थी; वह उनका उद्धार और उनकी एकमात्र आशा था! जब पतरस का संदेश के चरम पर पहुंचा, तो सच्चाई ने उन्हें झिंझोड़ा - कि मसीह तो आ चुका था! *उन्होंने* उसे केवल रद्द ही नहीं किया, बल्कि *उसे क्रूस पर भी चढ़ा दिया था*![4] अपने ऊपर आरोप के अहसास ने पतरस के सुनने वालों को कहीं का नहीं छोड़ा था। उन्होंने पाप करने की सीमा ही तोड़ दी थी। हर्षोल्लास का दिन दुखांत के दिन में तबदील हो गया

था। इसलिए वे पुकार उठे थे कि ''हे भाइयो हम क्या करें?'' क्या उनका भविष्य निराशा भरा था?

मसीह की आज्ञा मानकर (2:38-41)

जिस प्रकार हम यहूदियों द्वारा दोष का अहसास करने की प्रशंसा नहीं कर सकते, उसी प्रकार उनके प्रश्न के लिए पतरस के इस उत्तर से कि ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' (प्रेरितों 2:38) उनके प्राणों को मिलने वाली राहत की भी पूरी तरह से प्रशंसा नहीं कर सकते। आशा तो *थी*! उन्हें मसीह को क्रूस पर चढ़ाने के पाप से क्षमा मिल *सकती थी*! फिर, माफी पाने की शर्त किसी की पहुंच से दूर भी नहीं थी; सब लोग मन फिराकर बपतिस्मा ले सकते थे। फिर, पतरस ने यह नहीं कहा था, कि ''मन फिराओ, और मसीह को क्रूस पर चढ़ाने के पाप की क्षमा के लिए बपतिस्मा लो''; बल्कि, उसने बहुवचन शब्द ''पापों'' का इस्तेमाल किया था। यदि वे पतरस की बात मान लेते, तो परमेश्वर के अनुग्रह से उनके जीवनों के *सभी* पाप और वे सभी अपराध ढक जाने थे, जिनके कारण उनकी रातों की नींद उड़ गई थी!

इस बात पर ज़ोर देना चाहिए कि यद्यपि पतरस की बातों को मानना असज़्मव नहीं था, परन्तु उन्हें पूरा करना इतना आसान भी नहीं था। पतरस उनके जीवनों को सीधे अर्थात 180-डिग्री के मोड़ से कम मुड़ते नहीं देखना चाहता था: उन्हें अपने जीवन के पुराने ढंगों अर्थात मूसा की व्यवस्था से मुड़कर मसीह की ओर जाना था। पतरस उन्हें मसीह के साथ एक *प्रतिज्ञा* करने को कह रहा था, जिससे उनके शेष जीवन प्रभावित होने थे।

पतरस ने पहले कहा कि ''मन फिराओ।'' ''मन फिराओ'' शब्द यूनानी शब्द का अनुवाद है जिसका अक्षरश: अर्थ है ''मन या आचरण को बदलना।''[5] इसे जब मनुष्य पर लागू किया जाए तो साधारणत: इसका अर्थ '' *पाप* से मन को मोड़ना'' अर्थात पाप करना छोड़कर एक नए ढंग से जीवन व्यतीत करना होता है। यह अवस्था परमेश्वर-भक्ति के शोक से आती है (2 कुरिन्थियों 7:10)। जब हम पाप को वैसे ही देखते हैं जैसे परमेश्वर उसे देखता है तो हमें आभास होता है कि पाप कितना भयानक है। (ध्यान दें कि पाप करके *उदास* होने को मन फिराना नहीं कहा जा सकता। पतरस की बातें सुनने वालों के ''हृदय छिद गए'' थे - स्पष्ट है कि वे अपने किए पर दु:खी हुए-परन्तु पतरस ने उन्हें *फिर भी* कहा कि ''मन फिराओ।'') सचमुच मन फिराने से *जीवन* ही बदल जाता है। बाद में पौलुस ने अन्यजातियों से कहा था कि, ''मन फिराओ-परमेश्वर की ओर *फिर कर* मन फिराव के योग्य काम करो'' (26:20)। मन फिराना कठिन है क्योंकि यह नई जीवन शैली अपनाने का आह्वान करता है।

आगे, पतरस ने उनसे कहा था कि उनमें से हर एक ''बपतिस्मा ले।'' ''बपतिस्मा ले'' का अक्षरश: अर्थ ''डुबोए जाएं'' है। यहां पर, इसका अर्थ ''पानी में डुबोए जाएं'' है।[6] पानी में डुबोने की औपचारिक बात पतरस के सुनने वालों के लिए कोई नई नहीं थी। वे

औपचारिक रूप से धोए जाने से परिचित थे।[7] फिर, कुछ वर्ष पूर्व यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने भी तो लोगों को यरदन नदी में डुबकी का बपतिस्मा देकर हलचल मचा दी थी।[8] परन्तु, पतरस की इस आज्ञा में, बहुत सी नई बातें थीं: पहली, उन्हें ''यीशु मसीह के नाम से'' बपतिस्मा लेना था (पतरस ने उसकी उपाधि ''मसीह'' के साथ उसका नाम ''यीशु'' जोड़ा[9])। नाम से ही उस *नाम* में निहित उसकी शक्ति और व्यक्ति का पता चलता था।[10] मूलत: इन लोगों को ''यीशु मसीह के नाम *से* या *में*'' बपतिस्मा दिया जाना था।[11] इसका अर्थ यह था कि उन्होंने यीशु को अपने जीवन का मसीह और प्रभु मान लिया था।

''यीशु मसीह के नाम से'' वाक्यांश से किसी न किसी रूप में यह ज्ञात होता है, कि बपतिस्मा लेने से पूर्व उन्होंने यीशु में अपना विश्वास व्यक्त किया था।[12] इससे पहले पतरस ने योएल की भविष्यवाणी का हवाला देते हुए कहा था कि ''जो कोई प्रभु का नाम लेगा [या, पुकारेगा[13]] वही उद्धार पाएगा'' (आयत 21)। एफ.एफ. ब्रूस ने ध्यान दिलाया है कि ''बपतिस्मा यीशु मसीह के नाम से दिया जाना न केवल उसके अधिकार से, बल्कि, सज़्भवत: यह मानते हुए कि बपतिस्मा लेने वाले ने उसका नाम पुकारा या उसका अंगीकार किया है''(तु. 22:16)। एक और टीकाकार, आई. हॉवर्ड मार्शल, का सुझाव है कि ''यीशु के नाम में'' बपतिस्मा लेना यह दिखाता है कि बपतिस्मा लेने वाला यीशु में विश्वास रखता है, और उसके प्रमाण हेतु बपतिस्मा लेते समय लोगों के सामने यीशु को प्रभु मानना आम बात थी।'' पतरस के सुनने वालों ने यीशु मसीह के नाम ''से'' या ''में'' बपतिस्मा लेकर अपने आप को उसके आगे समर्पित कर दिया![14]

बपतिस्मा लेने के लिए पतरस की आज्ञा में दूसरा अन्तर ''पवित्र आत्मा का दान'' देने का वायदा था। ''पवित्र आत्मा का दान'' साधारण वाक्यांश है जिसके कई अर्थ हो सकते हैं। प्रेरितों के हाथ रखने से लोगों को जो आश्चर्यकर्म करने की शक्ति मिलती थी, उसे 8:20 में ''परमेश्वर का दान'' कहा गया। पवित्र आत्मा के बपतिस्मे को 10:45 में ''पवित्र आत्मा का दान'' कहा गया।[15] नये नियम में किसी और जगह आत्मा से प्रेरणा पाए सुसमाचार के आरज़्भिक प्रचारकों के हाथों हुए आश्चर्यकर्मों को ''पवित्र आत्मा के वरदान'' कहा गया (इब्रानियों 2:4)। प्रेरितों के हाथ रखने से मिलने वाली आश्चर्यकर्म करने की योग्यता को आत्मा के ''वरदान'' कहा जाता है (1 कुरिन्थियों 12:4, 9, 28, 30, 31; रोमियों 12:6 भी देखें)।

फिर 2:38 में ''पवित्र आत्मा का दान'' किसे कहा गया है? मूल शास्त्र तथा स्थानीय अनुवाद दोनों में इसका अर्थ ''पवित्र आत्मा के द्वारा दिया गया दान'' अथवा ''दान जिसमें पवित्र आत्मा है'' हो सकता है। इसके अर्थ को समझने के लिए संदर्भ को जानना आवश्यक है। प्रेरितों 2:38 के बिल्कुल पास के और व्यापक संदर्भ में, हम इन सच्चाइयों को देखते हैं: (1) यह दान सर्वसाधारण (के लिए) था, अर्थात इसकी प्रतिज्ञा उन सब के लिए थी, जिन्होंने जल में बपतिस्मा लेना था। न तो पवित्र आत्मा का बपतिस्मा और न ही लोगों पर हाथ रखने की योग्यता सर्वसाधारण (के लिए) थी, इसलिए यह दान उन दानों से हटकर है। (2) यह दान कोई चमत्कारी दान नहीं था। निस्संदेह उसी दिन, तीन हज़ार लोगों ने ''पवित्र

आत्मा का दान'' पाया, परन्तु प्रेरितों के सिवाय उनमें से किसी और ने कई वर्षों तक कोई आश्चर्यकर्म नहीं किया।[16] इसलिए, यह आयत ''पवित्र आत्मा के चमत्कारी दानों'' (बहुवचन) के बारे में नहीं बताती, (3) यह दान पापों की क्षमा (अथवा उद्धार) का दान नहीं था, क्योंकि पवित्र आत्मा का दान पापों की क्षमा के दान के साथ दिया जाता है (2:38)। (4) यह दान किसी न किसी रूप में ''विश्रांति के दिन'' की ओर संकेत करता है (जैसा कि अगले पाठ में 2:38 और 3:19 को आमने सामने रखकर, पढ़ने पर हम इसे देखेंगे।) (5) कुछ अध्यायों के पश्चात, पतरस ने परमेश्वर के पवित्र आत्मा के दान के बारे में कहा, ''जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया है, जो उसकी आज्ञा मानते हैं'' (5:32)। पवित्र आत्मा स्वयं भी एक दान हो सकता है। (6) नये नियम के शेष भाग में, पवित्र आत्मा सभी मसीहियों के साथ (उनमें ''रहकर''), उन्हें आश्वासन देता है कि वे परमेश्वर की संतान हैं और वह संसार पर जय प्राप्त करने के लिए उनकी सहायता करता है (रोमियों 8:9, 13, 16, 17, 26; 1 कुरिन्थियों 6:19, 20; गलतियों 4:6, 7; इफिसियों 1:13, 14)। इस प्रमाण पर विचार करने पर, हम भी एफ. एफ. ब्रूस की तरह निष्कर्ष निकालते हैं, कि ''आत्मा का दान स्वयं आत्मा है, जो महिमा पा चुके हमारे प्रभु ने पिता के अधिकार से दिया।''

पतरस के सुनने वालों के लिए इसका क्या अर्थ होगा? पुराने नियम में परमेश्वरत्व के तीसरे व्यक्ति के रूप में पवित्र आत्मा की शिक्षा की बात तो है, परन्तु स्पष्ट परिभाषित नहीं।[17] पतरस ने योएल का हवाला देते हुए, ''*अपना* आत्मा'' (2:17, 18) अर्थात *परमेश्वर का* आत्मा शब्द का प्रयोग किया। पतरस ने जब 33 और 38 आयतों में ''पवित्र आत्मा'' शब्द का प्रयोग किया तो उसके सुनने वालों ने पवित्र आत्मा को परमेश्वरत्व का अलग व्यक्ति नहीं समझा होगा, बल्कि उसे परमेश्वर का आत्मा ही माना होगा।[18] अन्य शब्दों में उन्होंने पतरस के शब्दों का अर्थ यह समझा होगा कि बपतिस्मा लेने के बाद, परमेश्वर स्वयं उनके जीवनों में आ जाएगा। हो सकता है कि इस वायदे में शामिल सभी बातों का उन्हें पता न चला हो, परन्तु उन्हें हिला देने वाले इससे बेहतर शब्दों की कल्पना करना कठिन होगा। मसीह को क्रूस पर चढ़ाने के बाद भी उन्हें त्यागने के बजाय, परमेश्वर पश्चात्ताप करके बपतिस्मा लेने वालों के साथ स्वयं आकर ऐसे रहने वाला था – जैसे वह पहले कभी भी अपने लोगों के साथ नहीं रहा था![19]

पतरस ने अपने सुनने वालों के सामने एक विकल्प रख दिया: वे यीशु के मसीह होने का इन्कार करना जारी रखकर उसकी आज्ञा मानने से इन्कार कर सकते थे। यदि उनका यह निर्णय होता, तो उनके अचिन्तनीय पाप कभी भी क्षमा नहीं होते और परमेश्वर उनसे अपना मुख मोड़ लेता।[20] दूसरी ओर वे मन फिराकर अपने जीवन यीशु को सौंपने के लिए पानी में डुबकी लगाकर यीशु की ओर मुड़ सकते थे। उनके ऐसा करने पर, परमेश्वर ने उनके सभी पापों को क्षमा करके फिर से उनके साथ रहने के लिए आ जाना था।

पतरस ने उनसे अनुरोध किया कि परमेश्वर द्वारा प्रस्तुत की गई कृपा के इस अवसर का लाभ उठाएं: ''क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर-दूर के लोगों के लिए भी है, जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा''[21] (2:39)। ''यह

प्रतिज्ञा'' परमेश्वर द्वारा उसकी ओर आने वालों को उससे जुड़ी सभी आशिषें देना है। ''तुम्हारी सन्तानों'' के लिए, इस वायदे का दायरा बढ़ाकर इसके स्थायित्व की ओर संकेत है।[22] ''दूर-दूर के लोगों के लिए'' इस वायदे को चारों ओर फैलाकर इसके सर्वसाधारण गुण को बताता है। यह वायदा सभी के लिए था (परन्तु पतरस के लिए इसे पूर्ण तौर पर समझने के लिए आश्चर्यकर्म की आवश्यकता थी[23])।

''उसने बहुत और बातों[24] से भी गवाही दे देकर[25] समझाया कि अपने आप को इस टेढ़ी [कुटिल या बेईमान[26]] जाति [पीढ़ी] से बचाओ'' (2:40)। ''टेढ़ी जाति/पीढ़ी'' यहूदी कौम को कहा गया है जिसने यीशु को नकार दिया था।[27] फिर भी उनको अपनी पसन्द चुनने का अवसर दिया गया: वे ''टेढ़ी जाति'' के साथ रहकर परमेश्वर को अस्वीकार्य हो सकते थे, या उस टेढ़ी जाति में से निकलकर परमेश्वर को स्वीकार्य हो सकते थे।[28] निर्णय उनके अपने हाथ में था। मूल में ''बचाओ'' आदेशात्मक लहज़े में है; यह एक आज्ञा थी जिसका पालन किया जाना आवश्यक था: यह कुछ ऐसा था जो *उन्होंने* करना था।[29]

तथ्य कि भीड़ ने अपने पाप को मान लिया और पुकार कर कहा कि, ''हम क्या करें?'' इस बात की गारन्टी नहीं कि जो कुछ पतरस कहता, उन्होंने वही *करना* था। हम व्यक्तिगत तौर पर ऐसे लोगों को जानते हैं जो अपने पाप को मान लेते हैं, परन्तु जब उन्हें कहा जाए कि समर्पण करें तो वे मूल्य नहीं चुकाना चाहते। इसलिए, अगले शब्द कितने लोमहर्षक हैं: ''सो जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया [पानी में डुबकी]''[30] (2:41क)। तीन हज़ार लोगों ने यीशु को ''हां'' और अपने जीवन के पुराने आचरण को ''न'' कहा!

बपतिस्मा लेने की आज्ञा मानने में उन तीन हज़ार लोगों को कठिनाई नहीं थी, न ही इनके बाद मसीही बनने वालों को कोई तकलीफ़ थी। ब्रूस ने ध्यान दिलाया कि ''बिना बपतिस्मा पाये हुए विश्वासी की बात नये नियम की नहीं लगती।'' आज, निस्संदेह, बहुतों के लिए बपतिस्मे की आज्ञा एक ठोकर है। क्योंकि कैथोलिक कलीसिया की शिक्षा है कि बपतिस्मा एक सेक्रामेंट है, और इसके लेने मात्र से ही किसी को आशीष मिलती है, इसलिए कुछ प्रोटेस्टेंट लोग इसके बिल्कुल विपरीत होते हुए इसी बात पर अड़ते हैं कि बपतिस्मे का किसी आशीष के साथ कुछ लेना-देना *नहीं* है। ''यदि कोई बपतिस्मा लेता है तो अच्छा है,'' उनका कहना है, ''किन्तु यह आन्तरिक शुद्धता के बाहरी चिह्न के अलावा और कुछ नहीं है।'' कई धार्मिक गुट अपनी डिनोमिनेशन का सदस्य बनने की शर्त बपतिस्मा ही रखते हैं, परन्तु यह ज़ोर देते हैं कि परमेश्वर द्वारा दी गई छुटकारे की योजना में इसका कोई योगदान नहीं है। इसके विपरीत, जब यीशु ने ग्रेट कमीशन दिया, तो उसने कहा कि यदि कोई उद्धार पाना चाहे, तो उसके लिए विश्वास करना और बपतिस्मा लेना आवश्यक है (मरकुस 16:16)। उस कमीशन को आगे ले जाते हुए, पवित्र आत्मा की अगुआई में पतरस ने कहा कि उसके सुनने वाले ''अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए'' बपतिस्मा लें (2:38)।

प्रेरितों 2:38 के शब्दों ''अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए'' की पकड़ से बचने के बहुत प्रयास किए गए हैं।[31] इनमें से सबसे अधिक प्रचलित शब्द ''(के लिए)'' का अर्थ ''

(क्योंकि)'' या '' (के कारण)'' बताया जाता है। इस व्याज़्या के अनुसार, पिन्तेकुस्त वाले दिन उन यहूदियों को बपतिस्मा लेना इसलिए आवश्यक था क्योंकि उन्हें पहले ही पापों से क्षमा मिल चुकी थी। जबकि धरातल पर, यह व्याज़्या अजब सी प्रतीत होती है: पीड़ा से कराह रहे लोगों ने क्षमा की पुकार की, और पतरस ने उनको बताया कि क्षमा पाने के *बाद* उन्हें क्या करना है?!

यह सत्य है कि अंग्रेज़ी शब्द ''for'' का अर्थ ''because of'' हो सकता है। परन्तु अनुवादित यूनानी शब्द इतना अस्पष्ट नहीं है। यूनानी शब्द उपसर्ग *eis* है, जिसका मूल अर्थ ''इन टू'' या ''अन टू'' हो सकता है। यूनानी उपसर्गों का अध्ययन करने पर इनमें से प्रत्येक की मूल क्रिया पर ध्यान देने से पता चलता है कि इनका सज़्बन्ध एक चक्र से है। *eis* की क्रिया को चक्र *के भीतर* एक तीर को जाते हुए दिखाया जाता है। *टीच योरसैल्फ न्यू टेस्टामेंट ग्रीक* में, *eis* की क्रिया को दिखाने के लिए एक हास्यास्पद चित्र का प्रयोग किया जाता है: एक व्यक्ति शेर के मुंह *में* जा रहा है, उसके शरीर का पिछला भाग अभी भी शेर के मुंह से बाहर है। इस कारण कई अनुवादकों के लिए प्रेरितों 2:38 में शब्द *eis* का अनुवाद ऐसे करना जिससे इसके ''की ओर बढ़ने'' का पता चलता हो असामान्य नहीं रहा है। उदाहरण के लिए, अमेरिकन स्टैंडर्ड वर्ज़न के अनुवाद में ''*unto* the remission of your sins'' है। एक अन्य अनुवाद में ''*into* the remission of your sins'' है। हिन्दी के अनुवाद में ''पापों की क्षमा के लिए'' ही है।

प्रेरितों 2:38 के यूनानी वाक्यांश के अनुवाद ''पापों की क्षमा के लिए'' को समझने का सबसे अच्छा ढंग यह देखना है कि ऐसी ही पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग करने वाले इससे सज़्बन्धित भागों में इसका क्या अर्थ है। अटारी में बैठे, जब यीशु अपने शिष्यों को आने वाले समय के लिए तैयार कर रहा था तो, उसने उन्हें कटोरा देकर कहा, ''तुम सब इसमें से पीओ, क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लहू है, जो बहुतों के लिए *पापों की क्षमा के निमित्त* बहाया जाता है'' (मत्ती 26:27, 28)। मृतकों में से जी उठने के बाद, फिर भविष्य में होने वाली बात कहते हुए, उसने कहा कि ''यरूशलेम से लेकर सब जातियों में, मन फिराव का और *पापों की क्षमा का प्रचार* उसी के नाम से किया जाएगा'' (लूका 24:47)। यह विशेष बात प्रेरितों 2 अध्याय में पूरी हुई, जब पतरस ने कहा, ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने *पापों की क्षमा के लिए* यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले'' (आयत 38)।[32] प्रत्येक भाग में यूनानी शब्द ''पापों की क्षमा'' के आगे यूनानी उपसर्ग *eis* मिलता है।

आपराधिक मामलों के न्यायालयों में, आम तौर पर अपराध-स्थल से प्राप्त अंगुलियों के निशान दोषी व्यक्ति की अंगुलियों के निशान के साथ स्क्रीन में रखकर, न्यायकर्ता को बुलाकर उन दोनों की तुलना करने को कहा जाता है। आइए यूनानी वाक्यांश को एक के बाद एक करके तीन पंक्तियों में रखें। यदि आपको कोयनि यूनानी भाषा की समझ नहीं है तो भी आप स्थानीय भाषा से मिलाकर देख सकते हैं कि मूलत: वे एक जैसी ही हैं:

मत्ती 26:28: यीशु का लहू बहा था
εις αφεσιν αμαρτιων
(मूलत: पापों की क्षमा के लिए)।

लूका 24:47: मन फिराव का प्रचार होना था
εις αφεσιν αμαρτιων
(मूलत: पापों की क्षमा के लिए)।

प्रेरितों 2:38: मन फिराव और बपतिस्मा (... है)
εις αφεσιν των αμαρτιων υμων
(मूलत: तुम्हारे पापों की क्षमा के लिए)।

बाइबल की व्याख्या करने के लिए एक बुनियादी सिद्धांत यह है कि ''जब तक विवश न हों आप किसी आयत को उसके सरल, साधारण, स्वाभाविक अर्थ में ही लें।'' यहां पर 2:38 का ''सरल, साधारण और स्वाभाविक अर्थ'' यह है कि मन फिराव और बपतिस्मे का उद्देश्य पापों की क्षमा प्राप्त करना है। इसकी व्याख्या किसी और ढंग से करने की ''विवशता'' तो वह थिओलोजिकल पूर्वाग्रह ही हो सकता है जिसके अनुसार छुटकारे की योजना में बपतिस्मे का कोई योगदान नहीं है।

और भी कई कथन ध्यान देने योग्य हैं जिनसे परमेश्वर की योजना में से बपतिस्मे को निकालने का प्रयास किया जाता है,[33] परन्तु हम इस विषय पर काफ़ी समय ले चुके हैं। जब पतरस ने अपने सुनने वालों को बपतिस्मा लेने की आज्ञा दी, तो उन्होंने आज के कुछ लोगों की तरह न हिचकिचाहट दिखाई, न टालमटोल की, और न ही कोई बहस की कि उनके लिए बपतिस्मा लेना अनिवार्य है या नहीं। बल्कि (KJV के वाक्य का प्रयोग करें),''उन्होंने (तीन हज़ार लोगों ने) *आनन्द* से वचन को ग्रहण किया और बपतिस्मा लिया''!

तुरन्त मसीह की आज्ञा मान कर (2:41)

हमने अभी आयत 41 का अन्तिम भाग नहीं देखा: ''और उसी दिन तीन हज़ार मनुष्यों के लगभग उनमें मिल गए।'' जब उन्हें पता चल गया कि क्या करना है, तो उन्होंने उसे उसी क्षण किया। उनकी आत्माएं दांव पर लगी हुई थीं; तराज़ू में अनन्त काल का समय जो लटक रहा था। उन्होंने अपने प्रभु की आज्ञा माने बिना सूर्य को अस्त नहीं होने दिया। जब आप को पता चल जाए कि *आप* को क्या करना चाहिए, तो उसे कभी भी टालिए मत!

मसीह की कलीसिया में मिलाए जाकर (2:41, 47)

आयत 41 को छोड़ने से पहले हमें चाहिए कि यह बात रेखांकित कर लें कि जिन्होंने बपतिस्मा लिया, उनका क्या हुआ ''... और उसी दिन तीन हज़ार मनुष्यों के लगभग उनमें *मिल गए*''।[34] आयत 47 बताती है कि ''... जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें

मिला देता था।'' KJV ने वेस्टर्न टेक्सट से नकल करके लिखा है, ''जो उद्धार पाते थे प्रभु उनको प्रतिदिन *कलीसिया* में मिला देता था।'' शब्द ''कलीसिया'' बहुत से अनुवादों में नहीं मिलता, किन्तु संदर्भ इस बात की पुष्टि करता है कि उद्धार पाए हुए लोग कलीसिया में ही मिलाए गए। एक टीकाकार ने यही कहा, ''इस भाग का निष्कर्ष लूका यही कहकर निकालता है कि नए बनने वाले मसीहियों को प्रभु कलीसिया में ही मिलाता है।''

पतरस द्वारा यीशु का अंगीकार करने पर (मत्ती 16:16), यीशु ने उसे ''स्वर्ग के राज्य की कुंजियां'' देने का वायदा दिया (मत्ती 16:19) था। अर्थात, यीशु ने प्रतिज्ञा की कि राज्य/कलीसिया के द्वार खोलकर लोगों को सबसे पहले प्रवेश पतरस ही दिलाएगा। पिन्तेकुस्त के दिन ठीक ऐसा ही हुआ। पतरस ने लोगों को कलीसिया में प्रवेश की शर्तें बताईं, और कृपालु परमेश्वर की इस पेशकश का लाभ तीन हज़ार लोगों ने उठाया। जब उन्होंने बपतिस्मा लिया, तो उन्होंने उद्धार पाया; उद्धार पाने के पश्चात परमेश्वर ने उन्हें कलीसिया में मिला लिया।

41 और 47 आयतों से बहुत बड़ी सच्चाइयां जानी जा सकती हैं। पहली, हमारे पास कलीसिया की सरल सी (परन्तु *गूढ़*) परिभाषा है: *कलीसिया उद्धार पाए हुए उन लोगों की देह है* – जो मसीह के लहू के द्वारा बचाए गए हैं। सामान्यत: लोग कलीसिया की सदस्यता तथा उद्धार को दो अलग-अलग बातें कहते हैं।[35] परन्तु, इन दो आयतों के अनुसार दोनों का अर्थ एक ही है!

पुन:, ये आयतें बताती हैं कि कलीसिया में हम अपनी इच्छा से ''शामिल'' नहीं होते अर्थात हम कलीसिया में सदस्यता नहीं लेते; बल्कि, प्रभु हमें कलीसिया में ''*मिलाता*'' है। क्या यह केवल अर्थ निकालने की बात है? नहीं, इस पर तो बाइबल का बहुत बड़ा सिद्धांत दांव पर लगा है। जब मैं किसी संगठन में (शामिल) होता हूं, अर्थात मैं उसकी सदस्यता लेता हूं तो यह सब करने वाला मैं होता हूं। कुछ शर्तों को पूरा करने के बाद मैं उस सगंठन का सदस्य बनने का अधिकार प्राप्त कर लेता हूं। परन्तु मैं प्रभु की कलीसिया का सदस्य बनने का अधिकार नहीं पा सकता। कलीसिया तो *उद्धार पाए* लोगों की देह है। क्योंकि मैं स्वयं का उद्धार नहीं कर सकता, इसलिए मैं स्वयं उसकी देह का सदस्य नहीं बन सकता। जो अपने अनुग्रह से मुझे उद्धार देता है, वही मुझे उस देह का सदस्य या अंग बनाता है।[36] (मुझे *यह* विचार भाता है: *परमेश्वर* मिलाता है; *हम* स्वागत करते हैं!)

41 और 47 आयतों से और भी कई सच्चाइयों पर विचार किया जा सकता है, परन्तु मैं इस पर ज़ोर देना चाहता हूं कि जब हम पवित्र शास्त्र के अनुसार बपतिस्मा लेते हैं तो हम उस आध्यात्मिक संगति के सदस्य बन जाते हैं, जिसे ''कलीसिया'' कहते हैं। परमेश्वर की इच्छा हमें आध्यात्मिक ''एकांतवासी'' बनाने की नहीं थी। कभी न कभी, हमें आवश्यकता पड़ती है कि कोई आकर हमें सहारा दे। कलीसिया की स्थापना करके, परमेश्वर ने एक दूसरे को सहारा देने वाला समूह उपलब्ध करवा दिया![37]

उद्धार के विषय में, हमारा अतीत, वर्तमान और भविष्य के साथ अच्छा सम्बन्ध होना चाहिए: *अतीत* में किए पापों का कष्ट हमारे साथ है; पता नहीं भविष्य में हम में सामर्थ होगी

भी या नहीं; वर्तमान में हमारे सामने उन आध्यात्मिक चुनौतियों का भय है जो हम पर विजय पाना चाहती हैं। परमेश्वर ने हमारी हर आवश्यकता को पहले ही जान लिया था। पश्चात्ताप करने वाले एक विश्वासी के रूप में जब हम बपतिस्मा पाते हैं तो परमेश्वर अतीत में किए हमारे हर पाप को क्षमा करके संभलने के लिए हमारी सहायता करता है (2:38)। परमेश्वर अपना आत्मा देकर हमारी सहायता करता है ताकि उसे पाकर हम भविष्य में सम्भल सकें (2:38): वह वर्तमान में हमें अपने परिवार, जिसे कलीसिया कहते हैं, का प्रिय सदस्य बनाकर भी संभले रहने में हमारी सहायता करता है (2:41, 47)।[38]

सारांश

पिन्तेकुस्त के दिन, भीड़ में दो प्रकार के लोग थे: एक वे थे जिन्होंने यीशु मसीह को ग्रहण किया और दूसरे वे थे जिन्होंने उसे ग्रहण नहीं किया; यीशु को अपना जीवन सौंप देने वाले और वे जो अपना जीवन सौंपने के इच्छुक न थे; अन्य शब्दों में, उद्धार पाने वाले और नाश होने वाले! क्या *आपको* विश्वास है कि यीशु ही मसीह है? क्या आपने अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा लिया है? यदि नहीं, तो आप आज उन लोगों की पंक्ति में हैं जिन्होंने उस दिन उसे ग्रहण नहीं किया, उनकी इच्छा नहीं थी, उनका नाश होना था। उसे स्वीकार करने वालों में, इच्छा व्यक्त करने वालों में, उद्धार पाने वालों में, आने में एक पल की भी देर नहीं करनी चाहिए।

विज़ुअल-एड नोट्स

किसी क्लास में शब्द ''मन फिराव'' के बारे में समझाने के लिए मैं अक्सर विद्यार्थियों से पूछता हूं कि उनके विचार में इस शब्द का क्या अर्थ है। कई लोग इन शब्दों का अर्थ ''पाप के लिए दु:खी होना'' या ''जीवन बदल जाना'' बताते हैं। मैं बोर्ड पर यह चित्र बनाता हूं:

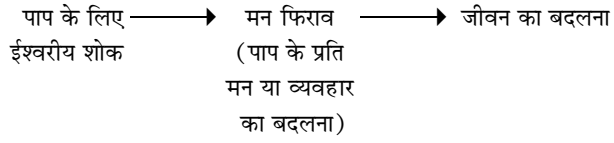

मेरी व्याज़्या बहुत ही स्पष्ट है कि, पाप के कारण उदासी, अपने आप में मन फिराना नहीं है, बल्कि इससे मन फिराव *उत्पन्न* होता है। फिर मैं यह कहता हूं कि, स्पष्ट तौर पर जीवन का बदलना मन फिराव नहीं है, बल्कि यह मन फिराने का *परिणाम* है। वास्तव में मन फिराना इन दोनों के बीच आता है: ''यह (पाप के प्रति) मन या आचरण का बदलना है।'' यह सब कहने के बाद, मैं इस चित्र के इर्द-गिर्द एक बड़ा सा घेरा बनाकर यह दिखाने

के लिए उस पर लिख देता हूं ''**मन फिराओ!**'' जब परमेश्वर हमें मन फिराने की आज्ञा देता है (लूका 13:30, इत्यादि) तो वह चाहता है कि ये सभी बातें हमारे मनों और जीवनों में हों।

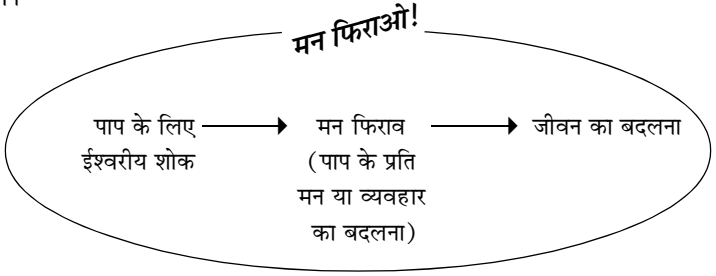

न्यायालय के आपराधिक मामले में अंगुलियों के निशान पहचानने के लिए की जाने वाली तुलना को दृश्यमान किया जा सकता है। एक बड़े से कार्ड पर, अंगूठे के दो निशान जो एक जैसे हों, का बड़ा आकार लगाइये (यदि फ़ोटो कापी करने वाला है तो इंकपैड से अपने अंगूठे का निशान लेकर उसकी फ़ोटो कापी को बड़ा कर लें)। दूसरे कार्ड पर, दिए गये तीनों पदों के यूनानी शास्त्र की प्रति (मत्ती 26:28; प्रेरितों 2:38; लूका 24:47), इतनी बड़ी कर लें जिससे सारी कक्षा में इसे पढ़ा जा सके।

पादटिप्पणियां

[1]यदि पूरे अध्याय के शीर्षक ''तीन हज़ार का उद्धार कैसे हुआ'' का उपयोग किया जाए, तो पहला प्वाइंट ''मसीह का वचन सुनकर'' (2:14-36) हो सकता है। [2]शास्त्र यह नहीं कहता कि ''तब पवित्र आत्मा पाने वालों के हृदय छिद गए,'' बल्कि यह कहता है कि ''तब *सुनने वालों* के हृदय छिद गए।'' पवित्र आत्मा प्रेरितों के प्रचार करने के द्वारा अपने वचन (इफिसियों 6:17) की तलवार चला रहा था। [3]हम इस प्रश्न का हल ढूंढने की कोशिश करते हैं कि परमेश्वर ने बिना किसी की स्वेच्छा को प्रभावित किए कैसे पहले ही जानकर बता दिया। स्पष्टत: यहूदियों को हमारी तरह कोशिश नहीं करनी पड़ी होगी। पतरस ने उन्हें कह दिया था कि यीशु को ''परमेश्वर की ठहराई हुई मनसा और ... ज्ञान के अनुसार'' क्रूस पर चढ़वाया गया; (पद 23)। परन्तु उसके सुनने वालों को पता था कि इतना जानने से ही उनके उस कृत्य के दोष से उन्हें राहत नहीं मिल सकती (आयत 37)। (यदि मिल सकती तो पतरस उन्हें यह उत्तर देता, ''तुम्हें अब कुछ *करने* की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि जो कुछ हुआ वह सब तुम्हारे हाथ में थोड़े ही था!'') [4]ध्यान दें कि पतरस ने ''इस्राएल के सारे घराने'' को सम्बोधित किया और कहा कि ''*उसी* यीशु को जिसे *तुमने* क्रूस पर चढ़ाया।'' अपनी बात के अन्त में पतरस ने उस इलाके में रहने वाले लोगों को ही ऐसा कहा होगा; परन्तु वह ''इस्राएल का सारा घराना'' कहकर उन सब पर यीशु के मसीह होने को अस्वीकार करने का आरोप लगा रहा था। [5]शब्दावली में देखें ''मन फिराव''। [6]प्रेरितों ने पानी के बपतिस्मे की ही आज्ञा दी थी (10:47, 48)। [7]उदाहरण के लिए, अन्यजातियों में से जो लोग यहूदी धर्म को स्वीकार करना चाहते थे, उनके लिए अन्य शर्तों को पूरा करने के साथ औपचारिक समारोह में अपने आपको डुबोना आवश्यक होता था। [8]मत्ती 3:6; यूहन्ना 3:23। [9]यीशु ने एक बार ''यीशु मसीह'' शब्द का उपयोग किया था (यूहन्ना 17:3); उसके अलावा, बाइबल में पहली बार यह शब्द यहीं पर मिलता है। [10]हम अक्सर कहते हैं कि ''मसीह के नाम से'' बपतिस्मा लेने का अर्थ ''उसके अधिकार से'' लेना है। मसीह के ''नाम से'' में उसकी सामर्थ या अधिकार *सम्मिलित* है (4:7 पर ध्यान दें, जहां ''सामर्थ''

और ''नाम'' को अदल बदल कर इस्तेमाल किया गया है)। नाम में उसके अधिकार से भी अधिक कुछ है; इसमें वह *सब कुछ* आता था जो वह था।

[11]कुछ आरज़्भिक हस्तलेखों में एन (*en*) (''में'') है, परन्तु अधिकतर में एपाय (*epi*) (अर्थात ''पर'') है। मान्य यूनानी शास्त्र जिसका इस्तेमाल आज होता है, उसमें एपाय (*epi*) ही है।[12]पतरस द्वारा बताई गई शर्तों को पूरा करके, उन्होंने निष्ठा के बदलने का संकेत दिया, परन्तु आयत 21 में ''का नाम लेगा'' और आयत 38 में ''के नाम से'' उनके द्वारा बपतिस्मा लेने से पूर्व यीशु पर विश्वास के मौखिक अंगीकार पर अधिक ज़ोर दिया गया है। जैसे अध्याय 8 का अध्ययन करने पर हम देखेंगे कि, बपतिस्मा लेना से पूर्व यीशु में विश्वास का अंगीकार करना आरज़्भिक कलीसिया का चलन था। [13]''नाम लेगा'' का अनुवाद मिश्रित यूनानी शब्द से किया गया है जिसका अर्थ है ''नाम पुकारना।'' इस पद में, यह मध्य स्वर में है; आन्तरिक पुकार का अर्थ ''सहायतार्थ पुकारना'' हो सकता है। [14]बपतिस्मा लेने वालों के लिए यह अहसास करना आवश्यक है कि वे ''केवल आज्ञा का पालन'' ही नहीं कर रहे, बल्कि जीवन भर यीशु के पीछे चलने के लिए स्वयं को समर्पित कर रहे हैं। [15]11:17 भी देखें, जहां पवित्र आत्मा के बपतिस्मे को ''दान'' कहा गया है। [16]उस समय प्रेरितों ने सात पुरुषों पर अपने हाथ रखे और उन्हें आश्चर्यकर्म करने की योग्यता दी (6:6, 8; 8:6)। [17]पवित्र आत्मा के बारे में हमारा अधिकांश ज्ञान वही है, जो हमने नये नियम से सीखा है। [18]यीशु ने पवित्र आत्मा के बारे में चेलों को बताया था, परन्तु जनसाधारण को पवित्र आत्मा के बारे में बहुत कम सिखाया गया है। [19]पवित्र आत्मा मसीहियों की सहायता कैसे करता है, पर अध्ययन रोमांचपूर्ण है। ''प्रेरितों के काम में पवित्र आत्मा'' पर अतिरिक्त लेख अगले एक भाग में दिया जाएगा। [20]पतरस ने यह स्पष्ट किया कि उसके सुनने वाले *खोए* हुए थे।

[21]परमेश्वर लोगों को सुसमाचार के प्रचार के द्वारा बुलाता है (2 थिस्सलुनीकियों 2:17)। [22]कइयों ने वाक्य ''तुज़्हारी सन्तानों'' में शिशुओं के बपतिस्मे को ढूंढने का प्रयत्न किया है। परन्तु ''प्रतिज्ञा'' तो यह थी कि *मन फिराने* और बपतिस्मा लेने वालों को पापों की क्षमा के लिए दान के रूप में पवित्र आत्मा मिलेगा। एक बालक ने कोई पाप नहीं किया है जिसके लिए उसे पश्चात्ताप करना पड़े, इसलिए वह मन नहीं फिरा सकता। ''तुज़्हारी सन्तानों'' का सीधा अर्थ है कि यह प्रतिज्ञा एक ही बार के लिए नहीं थी; बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी थी। [23]वह आश्चर्यकर्म प्रेरितों के काम 10 में आकाश से चादर उतरने का दर्शन था। अभी तक, पतरस यही सोचता होगा कि ''उन सब दूर-दूर के लोगों'' का अर्थ केवल दूर-दूर रहने वाले *यहूदी* ही हैं। यदि वाक्यांश का अर्थ उसके समय में अन्यजातियों का शामिल होना भी होता तो, तो उसे यही लगता कि परमेश्वर अन्यजातियों में से तब तक नहीं बुलाएगा जब तक वे खतना कराकर यहूदी मत ग्रहण नहीं कर लेते। [24]हमारे पास पतरस के प्रवचन के संक्षिप्त रूप हैं। [25]मूलत: ''उसने दृढ़तापूर्वक गवाही'' दी। अन्य शब्दों में, उसने यीशु के जी उठने और ईश्वरीय होने के बारे में भी बताया जो कि प्रेरितों के काम 2 अध्याय में दर्ज नहीं हुआ। प्रेरितों के काम में पतरस के अन्य संदेशों में उसकी साक्षी से हमें पता चलता है कि उसने किन अतिरिक्त गवाहियों का उपयोग किया होगा। [26]यहां यूनानी शब्द का मूल अर्थ ''टेढ़ा'' है। (लूका 3:5 में यह टेढ़े मार्ग के लिए प्रयुक्त हुआ है)। यही शब्द फिलिप्पियों 2:15 में प्रयोग हुआ है और उसका अनुवाद ''टेढ़े'' ही हुआ है इसका सज़्बन्ध यूनानी शब्द से है जिसका अक्षरश: अर्थ, ''विकृत'' है: इन दोनों शब्दों का आपस में गहरा सज़्बन्ध है)। [27]शब्द ''विकृत'' या ''टेढ़ा'' का तात्पर्य यही है कि यदि उनके मन निष्कपट होते, तो वे यीशु का त्याग न करते बल्कि उसे स्वीकार कर लेते। [28]''टेढ़ी जाति से बचाओ'' का अर्थ बुराई से या उसके होने वाले परिणाम से बचाओ है। कइयों का मानना है कि यह यरूशलेम के विनाश के बारे में है, जो यरूशलेम में इसके चालीस वर्ष बाद हुआ। यह सत्य है कि यहूदियों के विनाश से मसीही लोगों का ''बचाव'' हुआ, क्योंकि जब रोमियों ने आक्रमण किया तो यीशु की चेतावनी (मत्ती 24), मानकर वे नगर छोड़ कर भाग गए थे। परन्तु, यहां पर पतरस के मन में इससे भी गज़्भीर विचार हैं कि ''इस टेढ़ी जाति पर आने वाले *अन्तिम* विनाश से बचो, जिसमें वे सदा तक नरक में रहेंगे।'' [29]इस पर ज़ोर देने की आवश्यकता है, क्योंकि कइयों के अनुसार ''बचाओ'' तो कर्मवाच्य में है, उनकी शिक्षा है कि हमें पीछे

होकर बैठ जाना चाहिए। जो कुछ भी करना है, परमेश्वर स्वयं करेगा। तीन हज़ार लोगों ने जिस प्रकार पतरस की बात मान ली, उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि वे समझ गए थे कि उन्हें कुछ करने की आवश्यकता थी। अपने आप को ...बचाओ। किसी आज्ञा को मानने का संकेत है। [30]'डूब' के बजाय 'उंडेलने' के पक्षधर कई बार कहते हैं कि यरूशलेम में उस दिन तीन हज़ार लोगों को बपतिस्मा देने की सुविधा नहीं थी; इसलिए उन्हें डुबकी का नहीं बल्कि उंडेलने का बपतिस्मा दिया गया होगा। जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे ने ध्यान दिलाया कि डुबकी के उद्देश्य को पूरा करने के लिए यरूशलेम में पर्याप्त तालाब थे और तीन हज़ार को डुबकी लगाने में उस दिन कोई बाधा नहीं आई होगी।

[31]कई लोग यह कहते हैं कि जिस शब्द का अनुवाद 'मन फिराओ' हुआ है मूल में वह मध्यम-पुरुष बहुवचन है जबकि ''बपतिस्मा ले'' का शब्द एक वचन अन्य-पुरुष के लिए है। वे निष्कर्ष निकालते हैं ''कि इसका अर्थ है कि इन दोनों आज्ञाओं को अलग मानना चाहिए और इनका उद्देश्य एक ही नहीं है। पापों से मन फिराने पर पापों से क्षमा मिलती है, और उसके बाद किसी की इच्छा पर निर्भर करता है कि वह बपतिस्मा ले या न। यदि कोई बपतिस्मा लेने का निर्णय लेता है, तो यह सांकेतिक कार्य से अधिक कुछ नहीं है।'' परन्तु प्रेरितों 2:38 में वाक्य रचना हिन्दी और यूनानी दोनों ही भाषाओं में एक सी है, और किसी तरह यह संकेत नहीं देती कि दोनों आज्ञाएं अलग-अलग उद्देश्यों के लिए हैं। पतरस के श्रोता जानना चाहते थे कि जो पाप उन्होंने किया उसके लिए उन्हें क्या करना चाहिए और पतरस ने उन्हें आज्ञा दी कि वे मन फिराएं और बपतिस्मा लें ताकि उनके पाप क्षमा किए जाएं। क्षमा पाने की उनकी इच्छा का तब तक कोई वर्णन नहीं है जब तक पतरस ने उन्हें बपतिस्मा लेने की आज्ञा नहीं दी। [32]कई लोगों को इन हवालों में विरोधाभास लग सकता है: ''पापों से हमारा उद्धार कौन करता है: मसीह का लहू या मनुष्य की आज्ञाकारिता?'' ये हवाले आपस में उलझते बिल्कुल नहीं हैं, बल्कि ये एक दूसरे के सज्मानसूचक हैं: मत्ती 26:28 हमें बताता है कि हमें हमारे पापों से *कौन* शुद्ध करता है - मसीह का लहू। लूका 24:47 और प्रेरितों 2:38 बताते हैं कि उसका लहू हमें तब धोता है, जब हम मन फिराकर बपतिस्मा लेते हैं। [33]बपतिस्मे के विरोध में जो सबसे अधिक प्रचलित तर्क है वह यह है कि ''उद्धार विश्वास से होता है, कर्मों से नहीं'' (इफिसियों 2:8, 9; रोमियों 4), और क्योंकि बपतिस्मा तो एक कर्म है इसलिए हमें उद्धार दिलाने में इसका कोई योगदान नहीं है। यह तर्क योग्यता के कार्यों और आज्ञाकारी के कार्यों में अन्तर करने में नाकाम हो जाता है। पूरे धर्मशास्त्र में यही ज़ोर दिया गया है कि जब तक हम प्रभु की *आज्ञा* नहीं मानते, हमारा उद्धार नहीं हो सकता (मत्ती 7:21; इब्रानियों 5:9)। मैं ऐसे किसी मनुष्य को नहीं जानता जो यह दावा कर सके कि बपतिस्मा लेकर हम उद्धार को *कमा* लेते हैं। परन्तु हम तो परमेश्वर की कही हुई बात को मानकर उसकी कृपा *पाने* के लिए उसके सामने झुकते हैं। दिलचस्पी की बात यह है, कि वाक्यांश ''बपतिस्मा ले'' *क्रियात्मक* नहीं, बल्कि *उदासीन* मूड में है। जब हम स्वयं को बपतिस्मा देने (डुबोने) की अनुमति देते हैं तो हम वास्तव में विश्वास करने, मन फिराने और यीशु के नाम का अंगीकार करने से कम ''कार्य'' करते हैं। [34]''मिला देता'' शब्द अपने आप में ही यह पता देता है कि तीन हज़ार लोग कलीसिया में मिलाए गए और यह कि पहले भी कलीसिया में कोई था। परन्तु, शब्द ''मिला देता'' के साथ ''उन में मिला देता'' अधिक स्पष्ट है। शायद पद 41 में यह संकेत है कि वे तीन हज़ार प्रेरितों ''में मिलाए गए।'' [35]जो लोग ऐसा करते हैं, उनके मन में आमतौर पर कोई साञ्प्रदायिक कलीसिया होती हैं। किसी डिनोमिनेशन का सदस्य बने बिना तो उद्धार पाया भी जा सकता है, किन्तु प्रभु की कलीसिया का सदस्य बने बिना कोई उद्धार प्राप्त नहीं कर सकता। [36]विश्वव्यापी कलीसिया और स्थानीय मण्डलियों में अन्तर किया जाना जाहिए। जब प्रभु मुझे विश्वव्यापी कलीसिया में मिला लेता है तो फिर मुझे परमेश्वर के लोगों की आज्ञाकार मण्डली में सदस्यता लेने की आवश्यकता है। इस पर विस्तार से चर्चा हम अगले एक भाग में प्रेरितों 9:26 पर नोट्स में करेंगे। [37]कोई भी वर्तमान वाक्यांश जोड़ लें: ''सहायता प्रणाली,'' ''आध्यात्मिक नेटवर्क।'' [38]केवल ये ही ढंग नहीं हैं जो परमेश्वर ने हमारी आध्यात्मिक आवश्यकताओं के लिए पहले ही देखे और उपलब्ध करवा दिए, बल्कि ये वे तीन महत्वपूर्ण ढंग हैं जो परमेश्वर ने हमारे लिए दिए हैं, सभी प्रेरितों के काम 2 में मिलते हैं।